Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VIII Aug. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

'आई.ए.रिचर्ड्स का संप्रेषण सिध्दांत'

प्रा.देवकांत फुलचंद गुरव
एम.जी.डी महिला शिक्षणशास्त्र
महाविदयालय, सोलापूर.

आधुनिक युग में पाश्चात्य समीक्षकों में आई.ए. रिचर्ड्स का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने समीक्षाके क्षेत्र में नए दृष्टीकोन का परिचय देते हुए अनेक नये सिध्दांत की स्थापना की है। उन्होंने पहले मनोविज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में कार्य किया था, इतना ही नहीं, तो उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भी मनोविज्ञान व अर्थ–विज्ञान को अपनी स्थापनाओं के आधार रूप में ग्रहण किया है। रिचर्ड्स का काव्य–संबंधी दूसरा सिध्दांत संप्रेषण भी महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार किसी काव्य की समीक्षा के मूल्य के वैज्ञानिक आधार और संप्रेषण दोनों को आधारभूत मानना चाहिए। काव्य का आस्वादन करनेवाले व्यक्ति और समाज को इस सिध्दांत की अधिक आवश्यकता है। इसलिए उन्होंने संप्रेषण के आधारभूत तथ्यों की मीमांसा की है। काव्य में संप्रेषण का माध्यम भाषा है। और रिचर्ड्स ने उसका सूक्ष्म विवेचन किया है।

रिचर्ड्स के अनुसार आलोचना –सिध्दांत के आधारभूत दो स्तंभ है। 1) मूल्य का लेखा 2) संप्रेषण व्यापार का विवेचन। काव्यानुभूति के मूल्य का स्वरूप स्पष्ट कर देने से ही आलोचना–कार्य की इतिश्री नहीं हो जाती। आलेचक से इस बात की भी अपेक्षा रहती है कि वह इसका भी स्पष्टीकरण करे कि कविता के रूप में निबद्ध कवि की मूल्यवान अनुभूति पाठकों के मन में किस प्रकार समान मूल्यवान मनःस्थिति उत्पन्न करने में समर्थ होती है। संप्रेषण व्यापार का विश्लेषण इसलिए प्रत्येक आलोचना सिध्दांत का महत्वपूर्ण अंग है।

रिचर्ड्स ने मनोवैज्ञानिक आधारपर संप्रेषण पर विचार किया है। रिचर्ड्स संप्रेषण को अवचेतन मन का व्यापार मानता है। क्योंकि कलाकार स्वयं पाठक, प्रमाता के सामने उपस्थित नहीं रहता बल्कि वह रचना के माध्यम से उसके सामने आता है। कोई भी व्यक्ति अपने परिवेश के प्रति इस तरह प्रतिक्रिया व्यक्त करता है कि उसी परिवेश का दूसरा व्यक्ति प्रभावित हो जाता है और उसे उसी प्रकार की अनुभूती होती है, जैसे पहले व्यक्ति ने संप्रेषित की थी। यही संप्रेषण का सिध्दांत है। संप्रेषण कोई अद्‌भूत या रहस्यमय व्यापार नहीं है, अपितु मन की एक सामान्य किया मात्र है। संप्रेषण सिध्दांत रिचर्ड्स की आलोचना पध्दाति का महत्वपूर्ण अंग है। वे कहते है कि कलाएँ ही वह माध्यम है जिनके द्वारा कलाकार अपनी अनुभुतियों को दूसरों तक संप्रेषित करता है। कलाकार की अनुभूति और जनसामान्य की अनुभूति में तत्वतः कोई भेद नहीं होता। अंतर होता है तो अनुभूति की अभिव्यक्ति में तथा अनुभूति की तीव्रता में।

कलाकार अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि उसकी अनुभूति दूसरों तस संप्रेषित हो जाती है, तथा प्रत्येक को वह अनुभूति आत्मीय लगती है। ऐसे ही संप्रेषण भी कलाकार की सफलता मानी जाती है।

कवि के पास कुछ संप्रेषणीय होता रहता है। इस दृष्टि से कवि संप्रेषक है। कवि के पास जो कुछ संप्रेषणीय है, वह उसका मनोवैज्ञानिक अनुभूतिमूल्य होता है। कवि अपने इस मनोवैज्ञानिक अनुभूति मूल्य को दूसरे व्यक्ति और समाज तक संप्रेषित करने के लिए सहज प्रवृत्त हो जाता है। और सफल संप्रेषक के रूप में उत्कृष्ठ काव्य का निर्माण करता है। इसी प्रकार का काव्य व्यक्ति और समाज के लिए हितकारी होता है।

प्रभावी अभिव्यंजना को ही संप्रेषण कहते हैं और प्रभावी संप्रेषण कर्ता को ही कलाकार कहते है। इसके लिए अनुभूति की तीव्रता से ज्यादा जरूरी है उसका संघटन और संघटन से भी ज्यादा जरूरी है अभिव्यंजना के माध्यम का असाधारण प्रयोग कौशल जो अनुभूति को रूपायित कर सके।

संप्रेषणीयता के आधारभूत तथ्यों का वर्णन करते हुए रिचर्ड्स ने इसका श्रेय कवि की वर्णनक्षमता, श्रोता या पाठक की ग्रहण शक्ति को दिया है, पर इन दोनों के अतिरिक्त और भी बहूत से कारण है। सामान्यतः (विषय का) दीर्घ और घनिष्ठ परिचय, व्यापक जानकारी, जीवन की परिस्थितियों एवं अनुभूतियों की समानता आदि के कारण भी प्रेषणीयता संभव है। कुछ विशिष्ट एंव जटिल विषयों में से सफल प्रेषणीयता के लिए यह आवश्यक है कि संबंधित व्यक्तियों के अतीतकालीन संचित अनुभव या संस्कार बहूत कुछ एक से हो। साथ ही किसी एक विषय की प्रेषणीयता पर इसबात का भी गहरा प्रभाव पडता है कि उसे कौन से दूसरे विषयों एवं तत्वों के साथ समन्वित करके प्रस्तुत किया गया है और रिचर्ड्स के विचार से विचारात्मक और विश्लेषणात्मक निबंधो में भावोद्दिप्त का समन्वय नहीं होना चाहिए, अन्यथा वे अस्पष्ट हो जायेंगे।

कला के लिए संप्रेषणीयता अत्यंत आवश्यक है, किंतु क्या इसके लिए कलाकार को विशेष प्रयत्न करना चाहिए ? यादि कलाकार स्वयं अपनी कला को संप्रेषणीय बनाने का प्रयास करने लगेगा तो इससे संभव है कि उसकी रचना में कृत्रिमता आ जायेगी। क्योंकि कला में स्वाभाविकता का गुण तभी संभव है, जब कि कलाकार उसमें किसी प्रकार का बाहय प्रयास न करे। अतः रिचर्ड्सने एक और तो यह माना है कि कला में प्रेषणीयता आवश्यक है, किन्तु कलाकार को इसके लिए विशेष प्रयत्न नहीं करना चाहिए। सही बात यह है कि यदि कलाकार तल्लीनतापूर्वक कला की रचना करता है तो उसमें संप्रेषणीयता स्वयं ही आ जाएगी। कलाकार जितना अधिक सामान्य रूप से कार्य करेगा, अपनी अनुभूतियों के ठीक प्रकार से प्रस्तुतीकरण में उतना ही अधिक सफल होगा तथा उतने ही अधिक तद्नुकूल भाव पाठकों के मन में उत्पन्न होंगे।

संप्रेषणीयता का सिध्दांत कला के इस महत्त्व की ओर भी संकेत करता है कि उसमें मानव जाति के अतीत कालीन अनुभव संचित है या यह कहिए कि ''हमारे अतीत कालीन अनुभव के मूल्यांकन संबंधी महत्वपूर्ण निष्कर्ष है।'' अतः कलाओं का मूल्य कभी न्यून नहीं हो सकता।

संप्रेषण की कठिन परिस्थितियों में प्रेषण के साधन भी अनिवार्यतः जटिल होते है। रिचर्ड्स के अनुसार किसी शब्द का प्रभाव सहवर्ती शब्दों के कारण अलग–अलग हो जाता है। अपने–आप में अस्पष्ट वस्तु भी उपयुक्त प्रकरण में स्पष्ट और निश्चित हो जाती है। इसलिए एकतत्व का प्रभाव दूसरे पर निर्भर करता है। संप्रेषण–क्रिया में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है। कठिन और गहरे संप्रेषण की स्थितियों की दृष्टि से पद्य को गद्य की अपेक्षा श्रेष्ठता प्राप्त है चूँकि पद्य, गद्य की अपेक्षा, संप्रेक्षण का अधिक जटिल साधन है।

अतः संप्रेषण तब होता है, जब वातावरण पर मन की ऐसी प्रतिक्रिया होती है कि दूसरे मन की अनुभूति पहले मन की अनुभूति के समान होती है तथा एक अनुभूति दूसरी अनुभूति पर आश्रित होती है।

संक्षेप में कह सकते है –

1) संप्रेषण के लिए आवश्यक है कि एक मन की अनुभूति से दूसरा मन प्रभावित हो अर्थात उसमें भी ऐसी ही अनुभूति जागृत होने की भूमिका बन जाए।
2) दूसरी (उत्पाद्य) अनुभूति पहली (उत्पादक) अनुभूति से प्रेरित हो।
3) दोनो अनुभूतियों मे समानता होनी चाहिए।
4) अनुभूति की समानता का निर्धारण अनेक कारणों से होता है जैसे संप्रेषक (कलाकार) कीअभिव्यंजना क्षमता, भावक की ग्रहीता, योग्यता, सहृयता एवं सुरूचि।
5) अनुभूति में समानता का संबंध शिक्षा–दीक्षा, जीवन पध्दती तथा वर्ग से होता है।
6) रिचर्ड्स संप्रेषण को अचेतन प्रक्रिया मानते है।
7) कलाकार की अनुभूति और कलाकृति के बीच जितना ही संवाद होगा उतना ही अच्छा संप्रेषण होगा।

जहाँ वक्ता के पास विशिष्ट प्रकार की संप्रेषण – योग्यता नहो और श्रोता के पास भी वैसी ही विशिष्ट ग्राहिका शक्ति न हो वहाँ संप्रेषण के लिए सामान्यतः दोनो में दीर्घकालीन एवं वैविध्यपूर्ण परिचय, घनिष्ठ संबंध और प्रायः समान जीवन–परिस्थितियाँ अपेक्षित है, जिससे दोनों के अनुभव भांडार में बहुत–कुछ समानता हो। यदि पिछले समान अनुभवों का उपयोग किया जाता है तो संप्रेषण सफल होगा, यदि नहीं किया जाता है तो उसमें बाधा होगी। वस्तुतः रिचर्ड्स का संप्रेषण सिध्दांत भारतीय काव्यशास्त्र का साधारणीकरण है।

संदर्भ –

1) साहित्य और समीक्षा : स्वरूप और विवेचन – य.च.म.मु.वि
2) हिंदी गाईड – अनिलकुमार सोलंकी
3) हिंदी – सेट–नेट – डॉ.ओमप्रकाश शर्मा